

धान के प्रमुख कीटों की पहचान और उनके प्रबंधन



अंकिता भारती*, डॉ. महेश सिंह, डॉ. गणेश दत्त भट्ट एवं डॉ. प्रवीण कुमार जैन

*सैम हिगिनबोटम कृषि,
प्रौद्योगिकी और विज्ञान
विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर
प्रदेश-211007

कृषि विज्ञान महाविद्यालय,
तीर्थारकर महावीर विश्वविद्यालय,
मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश-244001

हमारे देश में धान एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। इसका उत्पादन भारत के साथ लगभग पूरे विश्व में किया जाता है। धान को दूसरे अनाज से अधिक महत्व दिया जाता है। इस फसल का आर्थिक महत्व अधिक होने के कारण इसके उत्पादन पर सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है। धान की फसल का जितना ज़्यादा उत्पादन होता है उससे भी ज़्यादा उसके नुकसान का डर रहता है, क्योंकि धान में कई प्रकार के कीट लगते हैं जो फसल को भारी मात्रा में नुकसान पहुंचा सकते हैं।

करीब सौ से भी ज़्यादा कीट, धान की खेती को नुकसान पहुंचाते हैं जिससे धान के उत्पादन पर बहुत अधिक असर पड़ता है। इनमें से कुछ ऐसे कीट हैं जो धान की फसल को भारी मात्रा में आर्थिक नुकसान पहुंचाते हैं।

1. धान का भूरा फुदका

(Brown Plant Hopper:

Nilaparvata lugens):-

भूरा फुदका धान के खेत का बहुत ही महत्वपूर्ण कीट है। हमारे देश में इसका फैलाव लगभग सारे धान उत्पादित क्षेत्रों में है जैसे की उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरला, वेस्ट बंगाल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, हरयाणा और पंजाब। इसका वानसपतिक नाम है नीलपर्वता ल्यूगेंस।

पहचान:-

- इस कीट के व्यस्क का शरीर भूरे रंग का होता है और इनकी लंबाई लगभग 4 से 5 मि.मि. होती है (लांबा और डोनो., 2021)।
- पंखों के आधार पर ये द्विरूपी होते हैं, यानी की इनमें से कुछ के पंख बड़े

होते हैं और कुछ के छोटे होते हैं (चित्र-1) (सोगावा., 1982)।

जीवनी:-

- व्यस्क मादा, धान के पत्तों के निचले भाग में चीरा लगा कर या खुरच कर उसमें एक बार में 100 से 500 अंडे देती हैं (लांबा और डोनो., 2021)।
- करीब 6 दिन के बाद अंडों की उषमायान अवधि पूर्ण हो जाता है और शिशु बाहर आ जाते हैं।
- भूरे फुदका के डिंभक धान के पत्तों का रस चूस कर जीवित रहते हैं (सोगावा., 1982) और करीब 15 दिनों के बाद व्यस्क बन जाते हैं।
- व्यस्क भूरे फुदका की आयु करीब 18 से 20 दिनों की होती है।

क्षति:-

- भूरे फुदका के डिंभक और व्यस्क दोनों ही धान के पौधों के तने पर एकत्र हो जाते हैं और तनों का रस चूसते हैं जिससे धान के संवहन पूल (vascular bundles) अवरुद्ध हो जाते हैं। इसके फल स्वरूप धान के पौधे मुरझाकर पीले पड़ जाते हैं (जाखर और अन्य., 2015)।
- भारी मात्रा में संक्रमित क्षेत्रों में खेत झुलसा हुआ दिखता है जिसे "फुदका झुलसा" (Hopper burns) कहते हैं इसके साथ ही धान का भूरा फुदका, धान के खेत में दूसरे विषाणु के लिए रोगवाहक का काम करते हैं (जेना और किम., 2010)।

प्रबंधन:-

- भूरा फुदका के प्रबंधन के लिए प्रतिरोधक धान कि किस्मों को उगाना चाहिए जैसे कि अरुणा, कर्नाटका, कार्तिका, IR-26 (लंबा और डोनों, 2021), अभय इत्यादि।
- नाइट्रोजन का अधिक प्रयोग करने से इस कीट को बढ़ावा मिलता है अतः इनके संक्रमण के दौरान खेतों में कम से कम नाइट्रोजन का उपयोग करना चाहिए (हाँग-ज़िंग, 2017)।
- ये कीट धान के तनों पर सिचाई जल स्तर से थोड़ा ऊपर संक्रमण करते हैं इसलिए आंतरायिक जल निकासी के साथ नियंत्रित सिचाई करनी चाहिए (ओका, 1977)।
- खेत में जगह जगह पर प्रकाश पात्र स्थापित करना चाहिए ताकि इस कीट जनसंख्या को नियंत्रित किया जा सके।
- जैविक नियंत्रण के लिए 5 प्रतिशत नीम के बीज का अर्क या 2 प्रतिशत नीम के तेल का छिड़काव करना चाहिए।
- रासायनिक नियंत्रण के लिए इमिडक्लोरपिड 17.8 SL 125 मि.लि. या बुप्रोफेज़ीन 25 SC 325 मि.लि. या एसिफेट 75 SP 625 ग्राम प्रति हैक्टर का छिड़काव

करना चाहिए (मथारु और तंवर, 2020)।

2. हरा पातफूदक (Green Leaf hopper: *Nephotetix nigropictus*) :-

हरा पातफूदक का फैलाव पूरे विश्व के धान उत्पादन करने वाले देशों में है जैसे की भारत, जापान, साउथ अफ्रीका, श्रीलंका और फिलीपीनस आदि। ये सिर्फ धान ही नहीं बल्कि दूसरी फसलों पर भी अपना जीवन चक्र जारी रख सकता है जैसे कि बाजरा, जौ इत्यादि। इसी कारण इसका प्रबंधन करना मुश्किल हो जाता है।

➤ पहचान:-

- हरे पातफूदक के व्यस्क और डिंभक दोनों ही हरे तथा हल्के पीले रंग के होता है और व्यस्क हरे पातफूदक के पंखों के आखिरी हिस्से में काले रंग के धब्बे पाये जाते हैं (डेय, 2016)।
- इनके व्यस्कों की लंबाई 2 से 3 मि.मि की होती है।
- इनके डिंभक के पंख नहीं होते और ये व्यस्क से थोड़े हल्के हरे रंग के होते हैं (चित्र-2)।

➤ जीवनी :-

- मादा पातफूदक एक बार में 200 से 300 अंडे, 8 से 16 के दल में धान के पत्तों के मध्यशीरे पर देती हैं (पाठक और खान, 1994)।

- हरे पातफूदक के अंडों की उष्मायन अवधि 6 से 7 दिनों की होती है।
- ऊष्मायन की अवधि के पूर्ण होते ही डिंभक अंडों से बाहर आते हैं और करीब 25 दिनों के बाद व्यस्क बन जाते हैं।
- व्यस्क हरे पातफूदक की आयु 25 से 30 दिनों की होती है।
- इनकी जनसंख्या अगस्त के महीने में बढ़नी शुरू हो जाती है और फिर सितम्बर अक्टूबर आने तक इनकी तादाद बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है क्योंकि इन महीनों में इन्हें अपने प्रजनन के लिए सबसे अनुकूल स्थिति मिलती है।

➤ क्षति :-

- हरे पातफूदक के लिए सितम्बर से अक्टूबर के बीच का वक़्त सबसे अनुकूल होता है क्योंकि इस बीच बारिश कम होती है और गर्मी होती है, इसी वजह से इनका संक्रमण इन महीनों में ज़्यादा देखा जाता है (बेगम, 2014)।
- इनके संक्रमण से धान के पौधों का विकास अवरुद्ध हो जाता है और कल्लों के निकलने की संख्या कम हो जाती है।
- इनके डिंभक और व्यस्क दोनों ही धान की पत्तियों के रस को चूस लेते हैं जिससे

पत्तियाँ मुरझाने लगती हैं (जाखर और अन्य., 2015)।

- इनके भारी संक्रमण के कारण पत्तों में फुदका झुलसा (Hopper Burns) के लक्षण दिखते हैं जिससे पौधे मुरझाने लगते हैं और धीरे धीरे पूरा पौधा सूख जाता है।
- इस कीट के संक्रमण का विशिष्ट लक्षण ये है कि इसकी पत्तियाँ नीचे कि ओर पीली पड़ती दिखाई देती हैं।
- धान के पौधों को सीधे रूप से क्षति पहुँचने के अलावा, ये हरे पातफुदक दूसरी बीमारियाँ जैसे कि धान के विषाणु रोग और धान के पीले बौने रोग को भी संचारित करते हैं (बेगम., 2014)।

➤ प्रबंधन:-

- प्रतिरोधी किस्म के बीजों का उपयोग इस कीट को रोकने में सहायक हैं, जैसे कि IR 24, राधा, निधि, विकरा मार्या, महानंदा, कुंती इत्यादि (प्रकाश और अन्य., 2014)।
- हरे पातफुदक धान के पत्तों को नुकसान पहुंचाते हैं फिर चाहे वो किसी भी अवस्था में क्यों न हो। नाइट्रोजन के ज्यादा इस्तेमाल से पत्ते जल्दी परिपक्व हो जाते हैं जिससे फसल का ज्यादा नुकसान होता है इसलिए इनके संक्रमण के दौरान खेत में कम से कम

नाइट्रोजन का इस्तेमाल करना चाहिए।

- खेत में इनकी जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए जगह जगह पर प्रकाश पात्र नियुक्त कर देना चाहिए ताकि ये कीट इन प्रकाश पात्रों कि तरफ आकर्षित हों और उनके जाल में फंस जाएँ (बेगम., 2014)।
- हरे पातफुदक के लिए कम बारिश और थोड़ी गर्मी की स्थिति सबसे अनुकूल होती है जिससे खेतों में एक नियमित नमी बनी रहती है। इस अनुकूल स्थिति को परिवर्तित करने के लिए संक्रमित खेतों में एक सीमित अंतराल पर अद्रण और शुष्कन करते रहना चाहिए ताकि।
- चूंकि ये हरे पातफुदक धान के अलावा दूसरे खरपतवार पर भी अपना जीवन चक्र कायम रख सकते हैं इसीलिए खेत की एक नियमित अंतराल पर निराई करते रहनी चाहिए।
- इनके भारी संक्रमण की स्थिति में कई प्रकार के कीटनाशकों का उपयोग किया जा सकता है। जैसे कि इमिडाक्लोप्रिड, ऐसीफेट, एंडोसल्फान, कीनल्फोस इत्यादि।

3. गन्धी बग (Rice Earhead bug):- *Leptocorisa acuta*

गन्धी बग का फैलाव भारत के लगभग सारे धान उत्पादन करने वाले क्षेत्रों में है। ये धान के अलावा दूसरी फसलों पर भी अपना जीवन चक्र जारी रख सकता है जैसे कि बाजरा, जौ इत्यादी।

➤ पहचान:-

- गन्धी बग की लंबाई लगभग 14 से 17 मि. मि कि होती है (सेरानों और अन्य., 2017)।
- व्यसक गन्धी बग हल्के भूरे और हरे रंग के होते हैं और शरीर से बेलनकर होने के साथ साथ इनके पैर लंबे होते हैं (चित्र-3)।
- डिंभक गन्धी बग हल्के पीले और हरे रंग के होते हैं (होसामनी और अन्य., 2009)।
- ये बग एक तरीके का गंध उत्पादित करते हैं जिसके कारण इन्हे गन्धी बग कहा जाता है।

➤ जीवनी:-

- मादा गन्धी बग एक बार में 200 से 300 अंडे देती है, जो कि थोड़ा चपटा और लाल भूरे गहरे रंग का होता है। इसके अंडे पत्तों या पुष्पगुच्छों पर देखे जा सकते हैं (सेरानों और अन्य., 2017)।
- अंडों कि ऊष्मायन अवधि 8 से 17 दिन कि होती है जिसके बाद डिंभक बाहर आते हैं (होसामनी और अन्य., 2009)।

- ये डिंभक हल्के हरे और भूरे रंग के होते हैं जो कि 17 से 27 दिनों के बाद व्यस्क बन जाते हैं।
 - ये व्यस्क 25 से 30 दिनों तक जीवित रह सकते हैं (सेरर्नो और अन्य., 2017)।
 - **क्षति:-**
 - अगस्त के महीने में गन्धी बग के अंडे धान और दूसरे खरपतवारों पर देखने को मिलते हैं क्योंकि इनके प्रजनन के लिए वर्षा ऋतु यानि कि अगस्त का महीना सबसे अनुकूल होती है।
 - शुरुआत में ये केवल धान के पत्तों का रस चूसते हैं जिसके कारण पत्तों पर पीले रंग के धब्बे पड़ जाते हैं जिनकी पहचान के लिए विशिष्ट रूप से धब्बों के किनारों पर भूरे रंग दिखाई पड़ते हैं (होसामनी और अन्य., 2009)।
 - गन्धी बग के व्यसक और डिंभक दोनों ही धान के दूधिया अवस्था में उसके बालियों के रस को चूसते हैं जिससे बालियों में दाने नहीं बन पाते (जाखर और अन्य., 2015)।
 - दाने न बन पाने के कारण बालियाँ खोखली हो जाती हैं और उनमें काले रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। इसके फलस्वरूप बालियों में सिकुड़न आ जाती है और बालियाँ सूख जाती हैं (शर्मा और अन्य., 2019)।
 - गन्धी बग के कारण धान के उत्पादन में 25 से 70% प्रतिशत तक का नुकसान होता है (शर्मा और अन्य., 2019)।
 - **प्रबंधन:-**
 - धान के खेत कि एक सिमित अंतराल पर निराई करते रहना चाहिए ताकि सारे खरपतवार और गन्धी बग पोषी पोधों को जैसे की ईचीनोक्लोआ को हटाया जा सके।
 - ये कीट पौधों को सबसे ज़्यादा नुकसान दूधिया अवस्था में पहुँचते हैं जब धान की बालियों में दाने बनने वाले होते हैं (होसामनी और अन्य., 2009), इसीलिए धान जब दूधिया अवस्था में हो उसी वक़्त खेत में प्रकाश पात्र/जाल लगा देने चाहिए ताकि ये गन्धी बग रोशनी कि तरफ आकर्षित हो कर खेत से बाहर निकल जाएँ।
 - धान का तुल्यकालिक रोपण करने से भी इस कीट से होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है।
 - जैविक नियंत्रण के लिए 5 प्रतिशत नीम के बीज का अर्क या 5 प्रतिशत दस्पर्णी अर्क का इस्तेमाल किया जा सकता है (दास और एलईडम., 2018)।
 - रासायनिक नियंत्रण के लिए कार्बेथल 50% EC या मेलाथिओन 50% EC को 1150 मिलिलीटर प्रति हैकटैर के दर से या मोनोक्रोटोफॉस 36% एसएल का 1390 मिलिलीटर प्रति हैकटैर के दर से छिड़काव किया जा सकता है (गुप्ता और कुमार., 2017)।
- 4. धान का टिड्डा (Rice Grasshopper:-**
Hieroglyphus banian)
- आमतौर पर टिड्डा कई फसलों में देखा जाता है जो फसलों को मामूली नुकसान पहुंचाता है, पर धान का टिड्डा धान की पैदावार को ज़्यादा नुकसान पहुंचाता है। इसका वानस्पतिक नाम है हाईरोग्लाइफस बेनियन (लांजर और अन्य., 2002)।
- **पहचान:-**
 - धान टिड्डा के व्यसक का आकार हमारी छोटी उंगली के बराबर होता है (चित्र-4)।
 - इनके शरीर का रंग हल्का भूरा और पीला होने के साथ ही चमकदार भी होता है जिस पर ऊपर की तरफ तीन धारियाँ होती हैं (सुलताना और लेकोक., 2019)।
 - इनके शिशु हल्के पीले रंग के होते हैं जिन पर कई सारे लाल धब्बे होते हैं और जैसे जैसे ये बड़े होते जाते हैं इनका रंग हरा या भूरा होता जाता है।

➤ **जीवन चक्र:-**

- मादा टिड्डा सितम्बर से नवम्बर के महीने में मिट्टी में करीब 35 से.मी. गहराई में अंडे देती हैं।
- ये अंडे फल्लियों/अंडकोषों में होते हैं। एक अंडकोष में करीब 7 से 99 अंडे होते हैं (सुलताना और लेकोक्र.,2019)।
- ये अंडे नवम्बर से मार्च के बीच सोते हैं और करीब 8-11 महीने तक अवरुद्ध अवस्था में रहते हैं (मोइजुद्दीन.,2001)।
- वर्षा ऋतु यानि की जुलाई के महीनों में इन अंडों से शिशु बाहर आ जाते हैं जिसके बाद अगस्त से अक्टूबर के बीच ये फसलों को भारी मात्रा में नुकसान पहुंचाते हैं (लांजर और अन्य.,2002)।
- इनके शिशु करीब 2.5 से 3.0 महीने तक का समय लेते हैं व्यस्क बनने के लिए। इस दौरान ये 6 से 7 बार निर्मोचन करते हैं (सुलताना और लेकोक्र.,2019)।
- व्यस्क बनने के बाद ये अपने साथी को तलाशते हैं और करीब 2 सप्ताह में अंडे देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

➤ **क्षति:-**

- धान का टिड्डा अगस्त-सितम्बर के महीने में ज्यादा सक्रिय रहता है इसलिए इनके द्वारा की गयी क्षति इनहीं महीनों में ज्यादा देखने

को मिलती है (लांजर और अन्य.,2002)।

- ये पौधों के कोमल भाग यानि फूल, पत्तियों और दूधिया दानों को काटते या चबाते हैं, जिससे फसल को भारी मात्रा में नुकसान होता है (सुलताना और लेकोक्र.,2019)।
- शुरुआत में इनके शिशु या व्यस्क पत्तों की किनारी को चबाते हैं जिससे पत्तों की किनारियां क्षतिग्रस्त दिखती हैं।
- धान की पुष्पन अवस्था में ये टिड्डे धान के फूलों को काट देते हैं।
- दूधिया अवस्था में ये या तो बालियों को चबाकर काट देते हैं या बालियों के दानों को चबाते हैं जिससे बालियों में दाने नहीं बनते और इस तरह ये फसल की पैदावार को कम करते हैं (सुलताना और लेकोक्र.,2019)।

➤ **प्रबंधन:-**

- धान की फसल के आसपास से सारे खरपतवार और पौशी पौधों को हटा देना चाहिए।
- मादा टिड्डा अपने अंडकोषों/मिट्टी के अंदर देती है अतः धान की रोपाई से पहले गहरी जुताई करने से ये अंडकोषों/बाहर आ जाते हैं जो या तो तेज़ सूर्य की रोशनी में जल कर खत्म हो जाते हैं या अंडों के परजीवी जैसे की ततैये की

कुछ प्रजातियों को खेत में छोड़ देना चाहिए ताकि वो अंडों को खा कर उसे खत्म कर दें (सुलताना और लेकोक्र.,2019)।

- रासायनिक नियंत्रण के लिए डाईक्लोरवोस 76 ईसी 500 मि.लि. प्रति हैक्टर के दर से या मेलथिओन 50 ईसी 2.5 लिटर प्रति हैक्टर के दर से छिड़कना चाहिए।

5. पत्ता लपेटक (Leaf roller: *Cnaphalocrocis medinalis*)

धान में पत्ता लपेटक कीट मामूली तौर पर देखे जाते हैं पर यदि इनका प्रबंधन वक़्त रहते न किया जाए तो ये फसल की पैदावार को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं। इनका वानस्पतिक नाम क्नफलोक्रोकिस मेडिनेलिस है।

➤ **पहचान:-**

- धान पत्ता लपेटक के व्यस्क के पंख पीले रंग के होते हैं जिसकी किनारी पर एक या दो धूसर रंग के धरियां होती हैं (रामकुमार और सिंह., 2013)।
- इनके लार्वा/केटरपीलर हल्के हरे और पीले रंग के होते हैं (चित्र-5)।

➤ **जीवन चक्र:-**

- धान पत्ते लपेटक की मादा एक बार में एक या समूह में अंडे देती हैं।

- इन अंडों से 4 दिन की उषमायन अवधि पूर्ण करने के बाद शिशु बाहर आते हैं।
- ये शिशु यानि की इल्ली हल्के हरे और पीले रंग के होते हैं जो की 6 निर्मोचन पूर्ण करते हैं जिसके बाद प्युपीकरण के लिए, ये पत्तों को अपने चारों ओर लपेट लेते हैं और करीब एक सप्ताह के बाद व्यस्क कीट के रूप में बाहर निकल आते हैं (अंकिता., 2021)।
- इनका पूरा जीवन चक्र करीब 5 सप्ताह में पूर्ण हो जाता है।

➤ क्षति:-

- इनके इल्ली(larva) पत्तों को अपने चारों ओर लपेट के उन्हें अंदर से खरोंच कर खाते हैं जिससे पत्ते पारदर्शी दिखते हैं (पाठक और खान., 1994)।
 - धान पत्ता लपेटक से संक्रमित धान के पत्तों पर अनुदैर्घ्य और पारदर्शी सफ़ेद रेखाएँ होती है।
 - संक्रमित धान के पत्ते नलीदार अवस्था में मुड़े हुए होते हैं।
 - बहुत ज़्यादा मुड़े हुए पत्तों की वजह से भारी मात्रा में संक्रमित धान का खेत झुलसा हुआ दिखता है (अंकिता., 2021)।
- #### ➤ प्रबंधन:-
- भारी मात्रा में नाइट्रोजन, पत्ता लपेटक कीट की वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं इसलिए इनके संक्रमण के

वक्त्र नाइट्रोजन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

- ये अपने जीवनचक्र को धान के खेत के आस पास के खरपतवारों पर भी कायम रख सकते हैं इसलिए समय समय पर खेत के आसपास निराई और खरपतवारनाशी दवाइयों का प्रयोग करना चाहिए।
- प्राकृतिक शिकारी जैसे की मकड़ी, ततैया इत्यादि को धान के खेत में छोड़ देना चाहिए (गुर और अन्य., 2011)।
- खेत में धान के पौधों का घनत्व कम रखें।
- रासायनिक नियंत्रण के लिए अल्फा-साइपरमेथ्रिन, ऐबामेक्तिन 2% या कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड का प्रयोग पत्ता लपेटक के इल्ली(larva) को खतम कर देते हैं (अलवि और अन्य., 2003)।

6. सफ़ेद पीठ वाला तेल (White backed Plant Hopper: *Sogatella furcifera*)

सफ़ेद पीठ वाला तेल का वानस्पतिक नाम सोजेटेला फुरसीफेरा है। ये डेलफासीडे कुल का और हेमिप्टेरा गण का कीट है। इसका फैलाव कई धान उत्पादित क्षेत्रों में दिखता है जैसे कि भारत, बर्मा, श्रीलंका, चीन, पाकिस्तान, जापान, इंडोनेशिया और कोरिया इत्यादि। ये कीट

कई पोषी पौधों पर अपना जीवन चक्र जारी रख सकता है जैसे कि मक्का, गन्ना और दूसरे घास।

पहचान:-

- इनके व्यस्क सफ़ेद रंग के होते हैं। इनके पंख का अग्रभाग पारदर्शी होने के साथ साथ उस पर गहरी नसें दिखती हैं और पीछे की छोर पर बीच में गहरा धब्बा होता है (कुमार और अन्य., 2015)।
- इनके शिशु भी सफ़ेद रंग के होते हैं जिनका शीर्ष विशिष्ट रूप से इनके चेहरे को संकीर्ण बना देता है (चित्र-6)।

जीवनी:-

- सफ़ेद पीठ वाले तेल का मादा व्यस्क, धान के पत्तों के मध्यशीरे पर या पत्तों के म्यान पर समूह में एक बार में 119 से 158 अंडे देती है (कुमार और अन्य., 2015)।
- इन अंडों कि उषमायन अवधि 6 से 7 दिनों की होती है जिसका बाद डिंभक अंडों से बाहर आ जाते हैं।
- इनके शिशु 4 से 5 बार निर्मोचन करते हैं और 11 से 14 दिनों के बाद व्यस्क बन जाते हैं (कुमार और अन्य., 2015)।
- मादा व्यस्क कम से कम 2 महीनों तक जीवित रहती है।

क्षति:-

- सफ़ेद पीठ वाला तेल के व्यस्क और डिंभक दोनों हि

धान के पत्तों और तनों का रस चूसते हैं (जाखर और अन्य., 2015)।

- इनके संक्रमण से पौधे का विकास अवरुद्ध हो जाता है।
- भारी मात्र में संक्रमण से खेत में "फुदका झुलसा" के लक्षण दिखते हैं (रमेश और अन्य., 2014)।

प्रबंधन:-

- इस कीट के प्रबंधन के लिए प्रतिरोधक किस्म का उपयोग करना चाहिए जैसे कि पंत धान 10, पंत धान 11, महानंदा, HKR 120

इत्यादी (प्रकाश और अन्य., 2014)।

- इनके नियंत्रण के लिए आंतरायिक जल निकासी के साथ नियंत्रित सिचाई करनी चाहिए।
- इनके संक्रमण के दौरान खेतों में कम से कम नाइट्रोजन का उपयोग करना चाहिए।
- खेत में जगह जगह पर प्रकाश पात्र स्थापित करना चाहिए ताकि इस कीट जनसंख्या को नियंत्रित किया जा सके (ह., और अन्य., 2016)।

- जैविक नियंत्रण के लिए 5 प्रतिशत नीम के बीज का अर्क या 2 प्रतिशत नीम के तेल का छिड़काव करना चाहिए।
- रासायनिक नियंत्रण के लिए इमिडक्लोरपिड 17.8 SL 200 मि.लि. प्रति हैक्टेयर या बुप्रोफेज़ीन 24 SC 100 मि.लि. प्रति हैक्टेयर या एसिफेट 75 SP 500 ग्राम प्रति हैक्टेयर का छिड़काव करना चाहिए (गुरुप्रसाद और अन्य., 2017)।



(चित्र-1)



(चित्र-2)



(चित्र-3)



(चित्र-4)



(चित्र-5)



(चित्र-6)